खंड ३ संख्या ३२

सत्यमेव जयते

बिहार विधान सभा वादवृत्त

सरकारी रिपोर्ट

बुधवार, तिथि १४ मार्च, १९५१।

The Bihar Legislative Assembly Debates

OFFICIAL REPORT

Wednesday, the 14th March, 1951.

अधीक्षक, राजकीय मुद्रणालय, बिहार,
पटना,
१९५२

[मूल्य—६ आने।]
[*Price—Annas 6.*]

शुक्रवार, तिथि ६ अप्रैल १९५१

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान-सभा का कार्य विवरण।

सभा का अधिवेशन पटने के सभा-सदन में शुक्रवार, तिथि ६ अप्रैल, १९५१ को पूर्वाह्न ११ बजे माननीय अध्यक्ष श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्मा के सभापतित्व में हुआ।

तारांकित प्रश्नोत्तर।

Starred Questions and Answers.

SUPERINTENDENT OF LIBRARIES.

*862. **Shri JAGANNATH SINGH** : Will the Hon'ble Minister for Education be pleased to state—

(*a*) the educational qualifications of the Superintendent of libraries and the total cost of his pay, travelling allowance and establishment per annum ;

(*b*) the total grant to the libraries that have been actually spent during the year 1950-51 ;

(*c*) the scheme for the re-organisation and improvement of libraries in the state and progress so far made ?

The Hon'ble Shri BADRINATH VERMA : (*a*) No permanent appointment as Superintendent of libraries has been made. The present Superintendent is M. A., Dip.-in-Edn. He holds substantially the post of Headmaster of a Zila school and has been temporarily placed on duty as Superintendent of libraries on his own scale of salary. Total cost of pay, travelling allowance and establishment from the 1st July, 1950, i.e., the date on which the Superintendent was appointed to March, 1951 amounts to Rs. 2,360.

(*b*) Rs. 1,00,000 only on purchase of books for supply to libraries. This is apart from the grants provided for school libraries all over the State.

(*c*) The scheme of the improvement of the libraries in Bihar has the following features :—

(*i*) A central staff to reorganise and supervise libraries ;

(*ii*) Taking over the Sinha Library at Patna as Central State library ;

(*iii*) Establishment of 5 district libraries in the backward districts of the State, i.e., at Purnea, Santhal Parganas, Ranchi, Manbhum, Singhbhum ;

(*iv*) Raising the present recurring grant to the libraries from Rs. 40,000 to Rs. 1,00,000 ;

NOTE—Starred question nos. 862-866 were not reached on the 5th April 1951.

(ग) संथाल परगना में कृषि कार्य के लिए जनवरी से जुलाई, १९५० तक कुल ३३ टन ५ हण्डरवेट ३ क्वार्टर और ११ पौंड लोहा और इस्पात वितरण किया गया जिसमें बैलगाड़ी के पहिए के हाल के लिए २१ टन १८ हण्डरवेट और ६ पौंड और कृषि सम्बन्धी औजारों के बनाने के लिए ११ टन ७ हण्डरवेट ३ क्वार्टर और ५ पौंड शामिल है ।

(घ) श्री खेदरू लाल बालगोविन्द लाल का फर्म जिनका पता—गोशाला बाजार, देवघर, वैद्यनाथधाम (संथाल परगना) है, कृषि विभाग की ओर से इस जिले के किसानों को वितरण किये जाने वाले लोहे का स्टॉक रखता है। इसके अलावे देवघर, जामतारा, गोड्डा, पाकुर और राजमहल में जहां कृषि सम्बन्धी कामों के लिए लोहे और इस्पात का स्टॉक बिक्री के लिए रहता है, क्रेडिट एंग्रीकोल डिपो हैं ।

जुलाई, १९५० तक जिन कृषकों को लोहा मिला उसकी सूची पुस्तकालय के मेज पर रख दी गई है ।

८७। श्री मंगर राम धोबी : क्या माननीय मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) क्या यह बात सही है कि हरएक जिले में ग्राम-पंचायत कार्य के लिए वेतन पर ग्राम-सेवकों की बहाली हुई है ;

(ख) यदि खंड (क) का उत्तर स्वीकारात्मक है, तो किस जिले में कब और कितने ग्राम सेवकों की बहाली हुई तथा उन्हें मंहगाई भत्ते के सहित कितना वेतन दिये जायेंगे अथवा दिये गये ;

(ग) कितने ग्राम-सेवकों को वेतन मिला और कितने को नहीं मिला और वेतन नहीं मिलने का क्या कारण है ?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा : (क) उत्तर 'हां' में है ।

(ख) ग्राम-सेवकों की बहाली का जिलेवार ब्योरा मेज पर रखा है । उन्हें मासिक वेतन केवल ४० रुपये ही दिये गये ।

(ग) सभी सरकारी पंचायतों के ग्राम-सेवकों को वेतन दिया जा चुका ह । पंचायतों के परीक्ष्यमाण ग्राम-सेवकों को वेतन देने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है।

जिले का नाम।	ग्राम-सेवक की बहाली की तिथि।	ग्राम-सेवकों की संख्या।	विशेष।
पटना ..	१ अप्रैल, १९५० ..	१११	
गया ..	१ अप्रैल, १९५० ..	५८	
शाहाबाद ..	१ अप्रैल, १९५० ..	५३	
मुजफ्फरपुर	१ अप्रैल, १९५० ..	२७	४ ग्राम-सेवकों को, जिनका कार्य अभी तक असंतोषजनक रहा है, वेतन नहीं दिया गया है।
सारन ..	१ मार्च, १९५० ..	३१	
चम्पारण ..	१ मार्च, १९५० और १ अप्रैल, १९५०।	१२०	
दरभंगा ..	५ मार्च, १९५० ..	६०	
भागलपुर ..	१ अप्रैल, १९५० ..	३८	
मुंगेर ..	१ अप्रैल, १९५० और १ जून, १९५०।	२९	
पूर्णिया ..	१ अप्रैल, १९५० ..	५३	
संथाल परगना	१ अप्रैल, १९५० ..	१११	
सहरसा ..	१ अप्रैल, १९५० ..	३७	
रांची ..	१ अप्रैल, १९५० ..	५४	
हजारीबाग ..	१ अप्रैल, १९५० ..	३३	
सिंहभूम ..	१ अप्रैल, १९५० ..	४२	
मानभूम ..	१ अप्रैल, १९५० ..	३	
धनबाद ..	१ अप्रैल, १९५० ..	१९	
पलामू ..	११ फरवरी, १९५० ..	१२	
		७९१	

चतरा थाने में शेर उपद्रव।

८८। श्री मंगर राम धोबी: क्या माननीय मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) क्या चतरा सबडिवीजनल औफिसर के पास चतरा थाने के शैलनचदागा, डाड़हा, पकरिया, अहरी आदि ग्रामों से शेर के उपद्रव की कोई रिपोर्ट मार्च, १९५० से आज तक आयी है;